॥श्रीऋणमोचनमहागणपतिस्तोत्रम्॥

(स्वमी रूपेश्वरानंद द्वारा संशोधित)

॥स्तोत्र पाठ आरम्भ॥

मैं देवों के देव, वक्रतुण्ड का स्मरण करता हूँ, जो महाबली हैं। जो षडक्षर मंत्र के रूप में करुणा के सागर हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥१॥

मैं महागणपति देव की वंदना करता हूँ, जो महान साहसी और महाबलवान हैं। जो महा-विघ्न-नाशक और सौम्य हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥२॥

एकाक्षर, एकदंत, एक ब्रह्म, सनातन। अद्वितीय जो एकमात्र हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥३॥

जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं, श्वेत वर्ण के हैं, श्वेत चंदन का लेप लगाते हैं। जो सम्पूर्ण श्वेत में लीन देवता हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥४॥

जो रक्त वस्त्र धारण करते हैं, रक्त वर्ण के हैं, रक्त चंदन का लेप लगाते हैं। जो रक्त पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥५॥

जो कृष्ण वस्त्र धारण करते हैं, कृष्ण वर्ण के हैं, कृष्ण चंदन का लेप लगाते हैं। जो कृष्ण पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥६॥

जो पीत वस्त्र धारण करते हैं, पीत वर्ण के हैं, पीत चंदन का लेप लगाते हैं। जो पीले पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥७॥

जो नीले वस्त्र धारण करते हैं, नीले वर्ण के हैं, नीले चंदन का लेप लगाते हैं। जो नीले पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥८॥

जो धूम्रवर्ण वस्त्र धारण करते हैं, धूम्र वर्ण के हैं, धूम्र चंदन का लेप लगाते हैं। जो धूम्र पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥९॥

जो सभी वस्त्र, सभी वर्ण, और सभी सुगंधित चंदनों से लिप्त हैं। जो सभी पुष्पों से पूजित हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥१०॥

जो शुभ पाश और अंकुश धारण करते हैं, भद्र रूप में उत्पन्न होते हैं। जो सभी विघ्नों को हरने वाले देवता हैं, ऋण-मुक्ति के लिए मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥११॥

फल-श्रुति:

जो व्यक्ति इस ऋण-हर स्तोत्र का पाठ सुबह के समय करेगा, वह छह महीनों के भीतर अपने ऋण से मुक्त हो जाएगा।

सिद्धि विधान एवं प्रयोग:

- साधना आरंभ: सिद्ध मुहूर्त में 1100 पाठ कर सिद्ध करें।
- समय: प्रातः सूर्योदय अथवा संध्या।
- पाठ संख्या: 11, 21, 51, 108 अथवा यथाशक्ति।
- दिन: सिद्धि पश्चात ऋणमुक्ति हेतु प्रतिदिन 40 पाठ 30 दिन तक करें, अथवा नित्य 11 पाठ 6 माह तक करें।
- भोग: भोग में लड्डू रखें, पाठ के बाद बच्चों को खिला दें।
- दिशा: प्रातः काल में पूर्व या उत्तर और रात्रि काल में पश्चिम।
- आहार: पूर्ण रूप से सात्विक भोजन सामान्य रहेगा इसमें लहसुन प्याज़ के सेवन से भी दूर रहना चाहिए। रात्रि भोजन का त्याग करें साधना काल में।
- संकल्प एवम् संक्षिप पूजन: षट्कर्म के उपरांत अपने गुरु एवं इष्ट का ध्यान करें एवं संकल्प बोलें। गणेश जी का संक्षिप्त पूजन करें धुप, दीप, पुष्प भोग आदि अर्पित करें। पाठ समाप्त होने पर क्षमा प्रार्थना करें।
- दुकान में आय हेतु 11 पाठ से अभिमंत्रित कर जल दुकान में छिड़कें।